भगवत् कृपा

गुरुभक्ति पत्र 1937 - 1997

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 20 अंक : 8	सम्पादक : **प्रभाकर राव**	वार्षिक चंदा : 50.00
मंगलवार 26-8-97	अगस्त-1997	प्रति अंक : 5.00

1 सितम्बर..................प.पू. पप्पाजी की जन्मजयंती

पहली सितम्बर.......प.पू.पप्पाजी की जयंती का महामंगलकारी दिन.......हम सभी के लिए भक्ति अदा करने का दिन.........

प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी ने गुरुहरि योगीजी महाराज के साथ जो अद्‌भुत संबंध किया, उससे स्पष्ट दर्शन होता ही है कि धरती पर अपनी योजना साकार करने गुरुहरि योगीजी महाराज इन दोनों भाइयों को अक्षरधाम से ही साथ में लाए......और जिस तरह इन दोनों भाइयों ने स्वयं को मिटा कर योगदान दिया है, उसके लिए समग्र गुणातीत समाज सदैव उनका ऋणी रहेगा।

बचपन से ही प.पू. पप्पाजी बहुत ही सरल व स्थितप्रज्ञ..... जगत में रहे तब भी बहुत ही सिन्सियर व सादगीपूर्ण आदर्श जीवन जिया और गुरुहरि योगीजी महाराज के संबंध में जब से आए और जीवन में एक बार **'बापा भगवान के साक्षात् स्वरूप हैं'** ऐसी प्रतीति हो जाने पर दृढ़ता से उनका प्रकाश बनकर ही जीये! कई कितने ज्वार-भाटे आए.....विपरीत संजोग आए......कठिन देशकाल, अनेक प्रकार की कसौटियाँ आईं, परन्तु प.पू. पप्पाजी की स्वरुपनिष्ठा अडिग.........

1953 में लिखे प.पू. पप्पाजी के निम्न लेख द्वारा उनकी अद्‌भुत स्वरूपनिष्ठा का सम्यक् दर्शन होता है......आईये, प.पू. पप्पाजी की जयंती के मंगल अवसर पर इस पत्र की गहराई को समझ कर 'स्वरूपनिष्ठा' दृढ़ करके पू. पू. पप्पाजी द्वारा बताए 'भगवान को वश करने के उपाय' को हमारी साधना की मूलभूत नींव बनाएं......

भगवान को वश करने का उपाय

श्रीजी महाराज ने वच. मध्य 54 में कहा है कि–तप, त्याग, ध्यान, व्रत वगैरह से जैसा मैं वश नहीं होता, 'सत्संग' से वश होता हूँ। इसलिए भगवान को प्रसन्न कर लेने का सबसे आसान तरीका 'सत्संग' है।

वह 'सत्संग' यानि क्या? तो सत् ऐसी आत्मा, सत् ऐसे परमात्मा, सत् ऐसे शास्त्र और सत् ऐसे गुरु का संग यानि–'सत्संग'। सत् ऐसे परमात्मा और सत् ऐसे शास्त्र की सही पहचान कौन कराएगा? ऐसी कक्षा पर वर्तते भगवान या भगवान के प्रत्यक्ष संत ! सो सत्संग अर्थात् सत् ऐसी आत्मा-आत्मसत्तारूप होकर सत् ऐसे परमात्मा का संग–उनकी भक्ति करनी वह !

आत्मसत्तारूप' होना यानि 'मैं' और 'मेरे' से, देह और देह से चिपकी हुई माया को नाशवंत मानकर-सांख्यज्ञान से उसे नाशवंत जानकर, सत्य स्वरूप आत्मा का रूप जानना और उसकी राह पर वर्तने का प्रयत्न करना वह।

सत् ऐसे परमात्मा–परब्रह्म की भक्ति करनी यानि–भगवान या भगवान से मिले संत जो प्रत्यक्ष रुप में पृथ्वी पर होते ही हैं–उनको जैसे हैं वैसे पहचान कर–अक्षरधाम में जो स्वरूप हैं वही यहाँ विचरण कर रहे हैं-यूं सर्व कर्ताहर्ता, अंतर्यामी, सर्व सत्तायुक्त, महिमायुक्त उन्हें जानकर उनमें आत्मबुद्धि करनी वह। उनका संग करना वह।

वासना से युक्त जीवात्मा से जब करोड़ों जन्म से तप, त्याग, ध्यान, धारणा इत्यादि साधन जब पूर्णता को पहुँचते हैं

तब ऐसे भगवान या भगवान के संत–जो पृथ्वी पर विचरण कर रहे होते हैं उसकी उसे पहचान होती है। पृथ्वी पर विचरण करते ऐसे भगवान को पहचाना, वहीं उसके सभी साधनों का अंत आ गया। वह भक्त बना ! (अर्जुन और कृष्ण)

भक्त बनने पर आत्मासत्तारूप होकर, परब्रह्म–प्रत्यक्ष भगवान जो मिले हों उनकी भक्ति करने से–सत्संग करने से भगवान वश हो जाते हैं। आत्मारूप होकर परब्रह्म की भक्ति करनी यानि केवल उन्हीं के आसरे रहकर, उनकी अनुवृत्ति के मुताबिक कार्य करते रहना। जब तक उसे देहात्मबुद्धि रहती है तब तक आसरा करा हो फिर भी सम्पूर्णतया प्रत्यक्ष मिले ऐसे भगवान की अनुवृत्ति में वह रह नहीं पाता। उसे प्रत्यक्ष स्वरूप में–

मनुष्यभाव आ जाता है,

उन्हें कर्ताहर्ता नहीं माना जाता,

उनको अंतर्यामी नहीं माना जाता,

जैसी है वैसी उनकी महिमा नहीं जानी जाती।

जब तक जीव ब्रह्मस्वरूप ना बने तब तक उसमें पुरुषोत्तम प्रगटते नहीं।

इस हेतु–

मूल अक्षर के साधर्म्य को पाने के लिए–

जीतेजी ही वश करने के लिए–

भक्त होने के बाद प्रगट मिली मूर्ति का अन्नन्यरूप से आसरा करना पड़ता है। दो हाथ जोड़कर, अति नम्रभाव से–हम जैसे हैं वैसे उनकी शरण में चले जाएं। उनमें दिव्यभाव रखकर सर्तकता से उनकी आज्ञा पालनी–उसका नाम आसरा। वे कहें वही सत्य ! उनकी आज्ञा और अनुवृत्ति में ही सब साधन आ गए !

वही धर्म! वही भक्ति !

पर यहां.....लोक, भोग, पक्ष और शास्त्र ऐसे भक्त को बंधनरूप हो जाते हैं। सो, मन के माने हुए सभी धर्म को छोड़कर उनकी शरण में जाना।

फिर वे प्रत्यक्ष भगवान या संत हमारी कसरें देखकर जिस तरह हम सह पायें यूं युक्ति से–

जितनी आज्ञा और अनुवृत्ति पाली जाए उतनी कृपा करके गुणातीत बनाते हैं–

उनके साधर्म्य की प्राप्ति कराते हैं। जैसे-जैसे उनके साधर्म्य को पाते जायेंगे, वैसे-वैसे अक्षरधाम का सुख जीतेजी ही पाते जायेंगे। प्रत्यक्ष मूर्ति में जितना विश्वास, श्रद्धा, निष्कपटभाव, अंतराय बिना का संबंध होता जाता है उतना कारण देह छूटता जाता है और जैसे-जैसे कारणदेह छूटता जाए वैसे-वैसे पुरुषोत्तम का स्वरूप खुलता जाता है–दिखाई पड़ता जाता है–अनुभव में आता जाता है। यूं मूल अक्षर के साधर्म्यपन को पाने पर उसमें पुरुषोत्तम नारायण प्रकाशित होते हैं–

और फिर भी

भगवान तो पर के पर रहते हैं। भक्त उनकी महिमा, उनकी सामर्थी को अधिक पाता जाता है। जीतेजी ही भगवान की मूर्ति का सुख अधिकाधिक पाता जाता है। उनके साधर्म्य को पाने पर वह भगवान स्वरूप नारायण–स्वरूप बन जाता है। भगवान उसके वश होकर वर्तते हैं और वह भगवान के वश होकर वर्तता है। ब्रह्मस्वरूप होकर परब्रह्म की दासत्वभाव से भक्ति करता जाता है।

कोई कहेगा कि ब्रह्मस्वरूप होने के बाद भी क्या बाकी रहा जो कि उसे भक्ति करनी पड़े? तो ऐसा मुक्त ब्रह्मस्वरूप होकर प्रत्यक्ष भगवान जो कि अपने आश्रित जीवों का कारणदेह टालने का ही कार्य करते होते हैं उनके ऐसे आश्रित जीवों का दर्शन करके, उनका दृढ़ पक्ष रखकर, सुहृद्भाव से भगवान के ही कार्य में सहाय करने लग पड़ता है। भगवान के ही कार्य को उठा लेता है। भगवान जो–जो जहाज तैयार कर रहे होते हैं उसमें खुद के हिस्से में आई कीलें आदि लगाने की सेवा करके जहाज तैयार करने में सहायभूत हो जाए–वही पराभक्ति। उसका आनंद वही परब्रह्म की मूर्ति का दर्शन और सेवा। वह जीतेजी कृतार्थ हो गया !

लेकिन श्रीजी महाराज ने कहा है कि–जैसी 'परोक्ष की महिमा समझते हैं वैसी की वैसी प्रत्यक्ष की समझ कर उसके मुताबिक वर्तना'। देखने में यह बात सीधी सादी लगती है पर खूब बारीक बात है। वह तो जब बरतने लग पड़ते हैं तब पता चलता है। परोक्ष मूर्ति के पास हम जैसे हैं वैसे, दूरी रखे बिना खुले हो सकते हैं। शब्दों में उनको पटा सकते हैं। अपने आपके साथ धोखाधड़ी कर सकते हैं। उनके पास खुले हो गए हैं यूं अपने आपको भुलावे में डाल लेते हैं, क्योंकि वह मूर्ति तो बोलती नहीं। श्रीजी महाराज के ही शब्दों के हम अपने ढंग से अर्थ निकाल कर, अपने आप से भी धोखा खेल सकते हैं और सन्तोष ले सकते हैं। जबकि प्रत्यक्ष मूर्ति (संत) तो भीतर की गहराई में छिपी कर्तापन की, अहंभाव की–साम्यावस्था की माया को ढूंढकर वह निकालने संजोग खड़े करके, दुःखती रग ही दबाते हैं। स्व के समर्पण की भावना से–

प्रत्यक्ष भगवान ही यह करवाते हैं और वे किसी ना किसी के कारण शरीर के भाव निकालने के लिए ही करते होंगे–

यूं हंसते मुँह मान कर आनंदपूर्वक आज्ञा और अनुवृत्ति पालनी वह बहुत ही दुष्कर है। सो, भगवान ने कहा है कि वह बात भले ऊपर से कहने में अति सामान्य लगती है, लेकिन है

बहुत सूक्ष्म।

पहले, भक्त भगवान को ढूंढने निकलते थे। अब की भगवान हमें ढूंढने आये हैं। वे तो अति दयालु हैं। जीव की अंदरुनी बगावत को जानते हैं और सो ही समर्थ होते हुए भी सामान्य कक्षा पर जीते रहते हैं।

हम जैसे गंदे पानी की बूंदों को भी,
उनसे द्वेष रखते हों तो भी,
उनमें मनुष्यभाव परखते हों तो भी–
वे हर किसी की हाँ से हाँ करते रहते हैं।
उनमें कोई निर्णय लेने की क्षमता ही नहीं,
व्यवहार में वे क्या जाने?

यूं मानकर उनके साथ हम वर्तते हैं। फिर भी वे दया रखकर, हमारे अज्ञान पर हँसकर, करुणाभरी दृष्टि रखकर कि एक बार भी तुमने स्वामिनारायण का नाम तो लिखा है ना–बस, यूं जानकर हमें सामने से दंडवत करते हैं। हमारी पसंदगी में रहते हैं, हमें मान देते हैं, लाड़ लड़ाते हैं–किसी भी तरह यह जीव भगवान को जैसे हैं वैसे पहचान ले यही करने और वह जीव सुखी हो जाए सिर्फ उस हेतु !

फिर भी हमारी उल्टी सोच ऐसी है कि चलती-फिरती, हमारे बीच झूलती प्रगट मूर्ति में हमें विश्वास नहीं आता।

वर्ना कर–करके करना यही है। विश्वास रखकर उनसे चिपके रहें। गल्तियाँ हों तो भी दो हाथ जोड़कर खुले हो जाना है। फिर वे अपने आप संभालेंगे। युक्ति से व हम सह पायें यूं कारण शरीर के भावों को टालते-टालते उत्तरोत्तर अधिक से अधिक अक्षरधाम का सुख जीतेजी देते जाते हैं और सूत के कच्चे धागे से वे हमसे बंधे रहते हैं–हमारे वश वर्तते हैं.....कहाँ जायेंगे? (जब हम उनके गले ही पड़ गये हैं!!)

–प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. पप्पाजी-1953

✡✡✡✡✡

निमंत्रण

'सभी में निर्दोष बुद्धि रख कर भगवान भज लेना....'–प.पू. काकाजी

आइये,

31 अगस्त' 97, रविवार सायं-6.30 से 8.00

प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. पप्पाजी महाराज की 81वीं जन्म जयंती

स्थानीय मुक्तों के साथ मिलकर मनायें

और

प.पू. पप्पाजी जी के इस सूत्र को जीवन ध्येय बनाये।

स्थान–**अनिर्देश**, काकाजी लेन, स्वानिारायण मार्ग, अशोक विहार-III, दिल्ली-110052

योगी डिवाईन सोसाईटी, दिल्ली

'श्रवण, मनन, निदिध्यासन'

✷ महाराज ने वचनामृत में एक-एक वाक्य जो कहा है वह कोई ऐरे-गैरे या भांग पीकर नहीं बोले। एक-एक बात, एक-एक वाक्य, एक-एक आशीर्वाद सब सही है.....पर विश्वास हमें रखना है।

✷ 'जो हमेशा सच ही बोले'– वो सत्यवादी की सामान्य परिभाषा....पर जिसकी बोली हुई हर बात सच होकर रहे– यह सत्यवादी की विशेष व्याख्या ! पू. काकाजी ऐसे थे !!

✷ जाने-अनजाने महाराज का किसी भी तरह एक बार संबंध हो जाना चाहिए। चाहे हम किसी भी निमित्त मंदिर में एन्ट्री करें.....

✷ बड़े संत जो कहें उनकी कही बात सच माननी चाहिए वही संबंध–वही निश्चय ! अगर हम सच नहीं मान पाते, तो वह हमारी बुद्धि का दोष है.....एक ऑर्डीनरी जज की बात भी हमें मान लेनी पड़ती है–वह हमें निर्दोष ज़ाहिर कर दे, तो कैसे सभी को मानना पड़ता है? पर, भगवान व संत कहें कि जाओ आज तक का सब माफ; फिर भी हमें उनके वचन का भरोसा ना आये ! तो फिर भगवान को हमने एक जज जितना भी नहीं माना.....

✷ जैसा हम बनावटी व शो-शा का जीवन जीते होंगे, वैसी ही निगाह से हम संत को देखेंगे.....असली साधु का

जीवन पूरा ट्रांसपेरेन्ट होता है.....जैसा होगा वैसा ही वह तुम्हें कहेगा। मानो हम में कोई बरकत नहीं हो, पर वो अगर कहता होगा, तो विश्वास से मानना कि भगवान उसकी बात मानेंगे और हमें ऐसा कर ही देंगे।

- हमें ऐसा नहीं मानना कि हम भक्त नहीं हैं या हम भक्त होंगे या नहीं.....हम तो ऐसे हैं–वैसे हैं..... भगवान हमारी प्रार्थना सुनते होंगे या नहीं.....हम तो भजन कर–करके थक गये–लेकिन कोई सुनने वाला नहीं, वगैरह विचार नहीं करने.....हमें अपने दोष जरुर देखने, लेकिन फिर दोषों के विचार में ही भी डूबे नहीं रहना। हाँ, सिर्फ एक ही बात का ख्याल रखते रहना कि साधु से मेरा संबंध अखंड दिव्यभाव वाला है या नहीं? मेरा साधु के साथ खुला संबंध है या नहीं?
- प्रीति–लगाव का लक्षण क्या? आँसू बहाने–वो लगाव का लक्षण नहीं। प.पू. योगी बापा ने कहा है साधु की बात का स्वीकार ना होता हो–बात जीव में ना बैठे.....हमारे मन में–बुद्धि में फिट ना बैठे तब भी उसकी आज्ञा का उल्लंघन ना करे.....वो जो कहे वही करें, उसकी बात को माने और उस दिशा में चलने लग जायें–वह प्रीति का लक्षण.....
- संत की हर बात मन को मान्य नहीं होती, पर पक्का यही करना है कि कैसे भी विपरीत संजोगों में मेरे गुरु ने जो कहा है वही करना है। अगर करने लगेंगे तो बुद्धि में भी बैठ जाएगा और हमें अनुभव भी होगा कि वे तो मेरे हक में ही कह रहे थे.....इनको कोई स्वार्थ नहीं है।
- गुरुहरि योगीजी महाराज के हम खूब शुक्रगुज़ार.....हमारे जीवन की परम धन्यता कि–बापा ने हमें शुरुआत से ही काकाजी–पप्पाजी के जोग में रख दिया, जिन्होंने बापा की किसी भी क्रिया का मूल्यांकन लौकिक ढंग से कभी नहीं किया.....
- संस्था से हमारे विमुख होने के बाद बापा ने पू. जशुभाई भट्ट साहेब (अमदावाद) को बोला था कि भारत सरकार की पंचवर्षीय योजना शायद फेल हो जाए, पर सहजानंदस्वामी की योजना फेल नहीं हो सकती। सब कुछ ठीक चल रहा है।
- भगवान को भी एक कायदा है कि जो उसका भरोसा करता है, भगवान उसका भरोसा कभी टूटने नहीं देते.....चाहे हमारा काम वो 11.59 मिनट 59 सैकेण्ड पर आकर करें.....द्रौपदी ने पहले अपनी रक्षा के सारे उपाय लिए.....आखिर साड़ी का पल्ला भी दांत में पकड़े रखा और जब वो भी छूट गया तो हे कृष्ण ! बोली, और.....भगवान तो तुरन्त हाजिर हो गए !
- मन के बवंडरों में, विचारों में, डीपरेशन आने पर, एक्साईटमेन्ट आने पर, मूड चले जाने पर सब उपाय छोड़कर बस पाँच मिनिट ही तीव्र भजन स्वामिनारायण–स्वामिनारायण.....
- संत को कोई व्यावहारिक इन्ट्रेस्ट होता ही नहीं है.....उसे तो प्रकृति पुरुष तक का सब राख समान है। संत सिर्फ हमारी चेतना देखता है, हमारा प्रभु के साथ का संबंध देखता है।
- वो जो कहे, वो करते रहें–बस इतनी ही साधना हमें करनी है। उसे भी परिश्रम कम और हम भी ऐश करते-करते बढ़ेंगे.....
- हम सम्पूर्णतया आज्ञा में रहें। थोड़ा माने-थोड़ा नहीं माने, 50-50 कर लेंगे.....ऐसा नहीं चलता।
- सत्पुरुष को सिर्फ बड़े संत मानना और प्रभु का स्वरूप मानना–इन दोनों में खूब फर्क पड़ जाता है।
- निष्ठा वाले भक्त के हृदय में प्रभु सदैव साक्षीरूप से विराजमान रहते हैं.....
- कोई भी काम भीतर में प्रभु को याद करके, अपने प्रभु की मर्जी को पूछकर करने के लिए पू. काकाजी बहुत डीटरमिन्ड रहते थे.....
- साधु बौद्धिक ढंग से कभी नहीं चलेगा। पू. काकाजी का सेवक कभी ऐसा नहीं सोचेगा कि फलां ने ऐसा किया सो अब यह करना है।
- अपने प्रभु तो प्रगट हैं.....तत्व से वो गए ही नहीं हैं। प्रगट को प्रत्यक्ष करना है और इस हेतु उसमें लय व लीन हो जाना।
- मन कम्प्यूटर की डिस्क जैसा है। कम्प्यूटर की डिस्क में जो भरेंगे वही उसमें फीड होता जाएगा। तो उसमें पोजिटिव थिंकिंग ही भरें।
- जब कुछ भी समझ न आये तो 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण.....'। इधर-उधर देखे बिना कुछ भी सोचे बिना कि क्या होगा। कैसे होगा? इस रास्ते चलूं या उस रास्ते वगैरह छोड़ कर–'स्वामिनारायण.....'

(क्रमशः)

✡✡✡✡✡

अलवदा.....पू. गोरधनकाका

1954 से प.पू. काकाजी, प.पू.पप्पाजी व प.पू.बा के एक मोरचे के निजी व भरोसेमंद सिपाहसलार बनकर रहे पू. गोरधन काका ने 12 अगस्त'97 की शाम को हमसे अलविदा ले ली....प.पू.गुरुजी जब से सत्संग में आए तब से उन्होंने पू.कांतिकाका, पू.गोरधनकाका व पू. रमणीकअदा को पू.पू. काकाजी, प.पू.पप्पाजी की योजना में हमेशा साथ देते देखा है.....

पू. गोरधनकाका के अक्षरधाम सिधारने की खबर सुनते ही–प.पू.गुरुजी ने बहुत ही हृदयस्पर्शी मार्मिक पत्र ताड़देव के योगेश्वरों व पू. हेमंत एवं डॉ. महेन्द्र मर्चंट को लिखा था.....

आईये, प.पू. गुरुजी के ही शब्दों में लिखे इस पत्र द्वारा पू.गोरधनकाका को निहारें–पहचाने व उनके प्रति श्रद्धांजली अर्पित करें.....

'पू.गोरधनकाका यानि– बृहद् गुणातीत समाज के सर्जनकाल से **'ताज के साक्षी'** समान हम सभी के–**'भीष्म पितामह'**! संतों, युवकों, गृहस्थों–सभी के लिए एक आदर्श पात्र !

संस्था ने जब हमें दूर किया–तब हम संतों सहित हमारे उस मुट्ठीभर समाज की नज़र पू.काकाजी, पू.पप्पाजी और पू.बा की गैर हाज़िरी में तीन विभूतियों पर रहती कि– वे क्या कहते हैं?

वे थे–

1. पू. गोरधनकाका 2. पू. कांतिकाका और 3. पू. रमणीक अदा.....

समय के प्रवाह ने एक–एक करके हमारे ये शिरछत्र हमसे छीन लिए ! सो, आज हमारी जवाबदारी खूब बढ़ गई है। जिस निष्ठा से–उन्होंने स्वयं के बाह्य एवं आंतरिक जगत को तनिक भी गिने बिना प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी के साथ खड़े रहकर, उनके कार्य में साथ दिया और साथ ही साथ हमारी हिफाज़त करके हमारा पालन किया, हमें बड़ा किया–उनका वह परिश्रम विफल न जाए उसका एक मन होकर जतन करने की अब हम सबकी फर्ज़ है।

पू. गोरधनकाका तो बहुत ही **बुद्धिशाली–विलक्षण ! उस समय के वे स्वर्णचंद्रक विजेता** ! बहुत ही सोच-समझकर, विचार करके कदम भरने वाले.....जिसकी हमें उनके प्रवचनों से गूंज आती कि उनकी थींकिंग बहुत ही क्लीअर है। भावना के प्रवाह में बहकर खींचे जाने वाले वे नहीं थे।

बहुत शुरुआत के दिनों में उन्होंने मुझे एक बार कहा था कि–ये दोनों भाईयों **(प.पू. काकाजी,प.पू. पप्पाजी)** की क्रियाओं के मूल्यांकनों से उन्हें नापने जाएंगे, तो हम गल्ती खा जाएंगे। पर, एक बात ऐसी है कि **पू. बापा के साथ का उनका जो संबंध है वह अद्वितीय है–ऐसा दूसरे किसी का दिखाई नहीं देता।** सो, उनकी बातें–उनके कार्य मेरी बुद्धि में बैठते हों या नहीं, लेकिन मैं उनके साथ हमेशा खड़ा रहूँगा ! क्योंकि, **उनके उस संबंध के आगे कभी भी दूसरा कुछ टिक ही नहीं पाएगा। यह थी उनकी बुनियादी समझदारी** जो हम सभी को आज भी टार्चलाइट के रूप में काम आ सकती है और अहसास कराती है कि हम खूब सही जगह पर हैं।

और.....अतिशय बड़े पुरुषों की भाषा का रहस्य और तात्पर्य अपने लिए ढूँढ़ निकालने की उनकी शक्ति अनोखी ही थी! मैं मानता हूँ, उनकी अंतर्मुखी प्रतिभा को वह आभारी होगी।

शुरु-शुरु में हमें जब दिल्ली भेजा था, तब की बात है। प.पू. काकाजी स्वामी रामतीर्थ की शताब्दी के उत्सव में खूब रस लेकर उसमें शामिल हुए थे! उसके अनुसंधान में उन्होंने एक बार ताड़देव की घर-घर की सभा में बात करी कि– 'रामतीर्थ शताब्दी में मैं जो लग पड़ा हूँ, वह मुकुंद के लिए कि–वहां आनंदस्वामी उसको सहायरूप बनें'।

प.पू. काकाजी की इस बात के बाद पू. गोरधनकाका बोले थे कि–'रामतीर्थ शताब्दी में पू. काका इसलिए इतना रस ले रहे हैं, उसकी **उन्हें हमारे पास स्पष्टता जो करनी पड़ती है, वह उनके साथ के हमारे संबंध में कसर है। यह थी उनकी कुशाग्र बुद्धि** ! ऐसी तो कई–कितनी ही बातें होंगी जिनका हमें उनके द्वारा समाधान मिलता था।

तो, उनके जैसी सूझ–स्थिर समझदारी को पकड़ कर हम ऐसी एकधारी श्रद्धा से–महामानव के सारे गुणातीत समाज की एकता और अखंडितता की रखवाली करते रहें और प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी के बगीचे के माली बनकर जीने में जीवन की कृतार्थता मानें यही ऐसे सिपहसालारों को हमारी सच्ची श्रद्धांजली होगी !

✡✡✡✡✡

अनिर्देश की गतिविधियाँ

✷ **14 अगस्त' 97** की शाम को **भारत की आज़ादी की सुवर्ण जयंती** के उपलक्ष्य में प.भ.डॉ.ए.के.पटेल साहेब के नेतृत्व में अशोक विहार के निकटवर्ती इलाके में अनिर्देश से **'मशाल यात्रा'** निकाली गई.....अनिर्देश तो अनेक बल्बों की रोशनी से खूब जगमगा रहा था.....प.पू. गुरुजी की आज्ञा से प.भ. ऋषि व मंडल की मेहनत आज रंग लाई.....'अनिर्देश' मंदिर के सबसे ऊपर तिरंगा रंग लिए हुए अखंड भारत का कटआऊट बीचोबीच प्रसन्न वदन भगवान स्वामिनारायण की मूर्ति स्थापित करके सभी को आवाक् कर रहा था.....भारत के कटआऊट के एकदम नीचे सुवर्ण जयंती का लोगो लगाया गया.....उस लोगो से नीचे मंदिर की दूसरी मंजिल पर एक ओर योगी डिवाईन सोसाईटी का व एक ओर अक्षरज्योति का लोगो लगाया गया। लोगो के नीचे श्रीजी महाराज का दिया करुणा वरदान अंकित था–

'अखंड धरा पर प्रकट रहूँगा, भारत पर आशिष बरसाए, श्याम.....घनश्याम.....धन्यवाद.....धन्यवाद !'

यूं जगमगाता हुआ अनिर्देश आने–जाने वाले सभी लोगों का मन मोह रहा था।

सायं करीब सवा सात बजे अनिर्देश से 'मशाल यात्रा' शुरु हुई.....मशाल यात्रा की शुरुआत में सबसे पहले दो सेवक दो तरफ राष्ट्रीय ध्वज लेकर चल रहे थे– ऐसे ही उनके बराबर में दोनों ओर दो सेवक मशाल लेकर चल रहे थे व बीचोबीच गुणातीत समाज का ध्वज लेकर एक सेवक चल रहा था। इस श्रृंखला के पीछे दो सेवक योगी डिवाईन सोसाईटी की ओर से भारत की सुवर्ण जयंती के उपलक्ष्य में शुभकामनाएँ देता बैनर लेकर चल रहे थे.....बराबर इनके पीछे डॉ. श्री ए.के. पटेल साहेब, प.पू. गुरुजी, पू. भाईस्वामिजी व अन्य संत और दोनों तरफ दो सेवक मशाल लेकर चल रहे थे और.....पीछे सभी हरिभक्त व इनके पीछे सभी बहनें भी उसी तरह मशाल व बैनर लेकर चल रही थीं.....

देशभक्ति के गीत, नारों व भजनों से अशोक विहार फेस-3 का सारा वातावरण अनोखी दिव्यता व जोश से भर गया.....'भारत माता की जय' 'वंदे मातरम्', 'देश की ज्योति जलती रहे', 'झंडा ऊँचा रहे हमारा', 'स्वतंत्र भारत अखंड रहे' जैसे नारों से स्वतन्त्रता संग्राम की स्मृतियाँ ताज़ी हो गईं और शक्ति एपार्टमेन्ट्स के श्री सुशील शर्मा की जोशीली वाणी व हमारे प.भ. हंसराज मदान एवं उनके परिवार की आत्मीयता ने हर एक को भीतर में एक अलग ही उमंग व उत्साह भरा, जिससे लगता था कि सभी को भारतीय होने का एक गौरव है और साथ ही प.पू. गुरुजी के सान्निध्य की अद्भुत खुशी.....

करीब ढाई घंटे तक चली यह 'मशाल यात्रा' सभी के लिए एक अनोखी स्मृतिरूप बन गई ! साढ़े नौ बजे के करीब मशाल यात्रा अनिर्देश में वापिस आकर 'राष्ट्रीय गान' द्वारा समाप्त हुई.....और सभी प्रसाद लेकर आनंद करते हुए घर लौटे।

✷ **15 अगस्त' 97** की सुबह अनिर्देश के प्रांगण में प.पू. गुरुजी, पू. भाईस्वामिजी व हरिभक्तों ने धून-भजन करके सुवर्ण जयंती निमित्त राष्ट्रीय ध्वज व गुणातीत समाज का ध्वज फहराया और राष्ट्रीय गान व हीरक जयंती की प्रार्थना गाई....प्रार्थना करते हुए प.पू. गुरुजी एक छोटे बच्चे की भाँति तो लगते थे ही, इससे भी अधिक उनके मुख से और उन्होंने यह सब जो आयोजन करवाया उससे उनके देश के प्रति प्रेम की, लगाव की एक अद्भुत झांकी मिलती थी.....

✡✡✡✡✡

स्वामी की बातें

568. लाखों को सत्संग कराएं और खुद नरक में जाए ऐसा भी होता है, क्योंकि जीवों का कल्याण हुआ वह तो भगवान ने किया। जैसे साहुकार का मुंशी जो हुंडी लिखता है वो स्वीकारी जाती है !

प्र-5,414

569. पंचाला के वचनामृत में कहा है कि जैसे–जैसे भगवान का संबंध दृढ़ होता है वैसे-वैसे सुख देता है। पर, भगवान परोक्ष हो जायें तब कैसे संबंध रहे? फिर उत्तर दिया कि–कथा, कीर्तन, वार्ता, भजन और ध्यान– इससे संबंध रखा कहा जाता है और इससे भी अधि– बड़े संत का संग वह तो साक्षात् भगवान का संबंध कहा जाये और भगवान का ही सुख आए; क्योंकि उसमें भगवान सभी प्रकार से रहे हैं। और प्रत्यक्ष थे, तब भी जैसे हैं वैसे नहीं पहचाने गये, तो वह संबंध

नहीं कहा जाये व इस प्रकार (तत्व से) पहचाने बिना तो प्रत्यक्ष हो तो भी क्या? और ठीक वैसे ही जिस संत में भगवान सभी प्रकार से रहे हैं उसे पहचाने तो आज परोक्ष ही हैं।

तब एक साधु ने कहा कि—क्या मूर्तियाँ प्रत्यक्ष नहीं? तब स्वामी बोले कि—प्रत्यक्ष भगवान का संत के चरित्र में मनुष्यभाव आए तो अमावस के चन्द्रमा की भांति घट जाता है और दिव्यभाव रखे तो दूज के चन्द्रमा की भांति बढ़ जाता है। मूर्तियाँ क्या चरित्र करेंगी जिससे कि अवगुण आए और घट जाएं? सो बोलते-चलते जो भगवान वही प्रत्यक्ष कहे जाएं। बड़े संत जो हैं वे ही मूर्तियों में ऐश्वर्य रखते हैं। लेकिन मूर्तियाँ, शस्त्र और तीर्थ—ये तीनों मिलकर एक साधु नहीं बना पायंगे। ऐसे बड़े संत हों वे मूर्तियाँ, शस्त्र व तीर्थ इन तीनों का निर्माण करें। सो, जिसमें भगवान सभी प्रकार से रहे हों, ऐसे जो संत हैं उन्हीं के द्वारा ही भगवान प्रत्यक्ष हैं।

प्र-5,415

570. क्लेश कैसे ना हो? इस प्रश्न का उत्तर किया कि राग, पक्ष और अज्ञान ये तीनों ना रहें, तो क्लेश नहीं आए और इनमें से एक हो तो भी क्लेश होता है।

प्र-5,416

571. साधुता के गुण युक्त गृहस्थ भी साधु कहलाएँ। कपड़े भगवे कर लिए उससे साधु नहीं कहा जाए।

प्र-5,417

572. हर एक बात सुनकर उसी के रूप हो जाना ऐसी बड़ी तो कोई कसर ही नहीं। बड़े मुक्तानंदस्वामी वगैरह के पास कोई बात करे तो वे पहले तो सुन लेते, फिर कुछ कहना जरुरी लगे तो बोलते, वर्ना तो बोलें (ही) नहीं। इसकी जड़ प्रतिलोभ कही जाये।

प्र-5,418

573. निवृत्त रहने में त्यागियों को चैन रहा और भगवान रखने का लाभ गृहस्थ ले गए। वह कैसे? क्योंकि त्यागी को बैठे-बैठे (तैयार) खाने को मिले, चीजें मिले और कोई उद्यम करना नहीं पड़े। गृहस्थों ने तो प्रगट स्वरूप को पहचाना, सो गृहस्थ भगवान रखने में कामयाब हो गये हैं।

प्र-5,424

574. .....यदि निरन्तर बातें हों तो यहीं अक्षरधाम मूर्तिमान दिखाई पड़े, सुख आए। लेकिन यह बात कही जाए ऐसा नहीं। यह तो रात है, सो बोल गए। इसलिए करने जैसा तो बड़े एकांतिक साधु का संग ही है।

प्र-5, 430

575. यह लिया और यह लेना है, यह दे दिया और यह देना है, यह किया और यह करना है, यह खाया और यह खाना है, यह देखा और यह देखना बाकी है, इन सभी बातों का अंत आएगा ही नहीं। को, इससे निवृत्त होकर भगवान भज लेना।

प्र-5,431

576. जिसने उत्तम पुरुष का सेवन किया हो, उसे दूसरे किसी की बातों से वैसा सुख नहीं आता। तो उसे क्या करना? तब कहा कि उनकी जो बातें सुनी हो उसे विचारें—पकड़े और बाकी दूसरों से भी ठीक लगें इतनी ग्रहण करें। यूं गूजारा करें और बड़े संत उसका पुष्टि जरुर करते होंगे।

प्र-5,432

577. और सब जगह पर माया की इंट्ट है, पर बद्रिकाश्रम, श्वेतद्वीप, और अक्षरधाम—इन तीन जगह पर माया नहीं है व यहाँ बड़े एकांतिक संत के पास माया नहीं है। बाकी सब जगह पर माया है।

प्र-5,433

578. पूर्वाश्रम में मुझे कंधे पर एक बड़ा फोड़ा हुआ था, उसमें बहुत दर्द हो रहा था। तब जागृत में अर्धरात्रि के समय महाराज पधारे और मुझे दर्शन दिए। उन्होंने पीला पीतांबर पहना हुआ था और लाल रंग का ऊपरी वस्त्र ओढ़ा हुआ था। सिर पर दक्षिणी पाघ पहनी हुई थी और ललाट पर केसर चंदन के तिलक के बीच कंकु का टीका शोभा दे रहा था एवं खड़ाऊ पहनी हुई थी। ऐसी शोभा देखकर मेरे मन की वृत्ति तो उस मूर्ति में जुड़ गई और.... फोड़ा फूट गया व दर्द भी टल गया! फिर, मुस्कुरा कर महाराज भी अदृश्य हो गये। तब से वह मूर्ति अखंड दिखाई देती। फिर जब 'अलैया मोड' गांव में महाराज के मैंने पहली बार दर्शन किए तब हृदय में दिखाई देती वह मूर्ति और यह (प्रगट) मूर्ति-वे दोनों एक हो गई। यह (सब) देखकर महाराज को सर्व कारणों के कारण और सर्व अवतारों के अवतारी पुरुषोत्तम समझ कर उनके सर्वोत्कृष्ट निश्चय का उपदेश दिया करते हैं।

प्र-6,1

✡✡✡✡✡

विजय दिन मनाएं आज रे.....

(रागः- पूर्वा सुहानी आई रे.... पूर्वा...)

मिल के खुशियाँ मनाओ-मनाओ-2
मंगल गीत भी गाओ रे गाओ-2
चंदन तिलक लगाओ-लगाओ-2
पुष्प हार पहनाओ-पहनाओ-2

विजय दिन मनाएं आज रे, काकाजी का;
सर्जन अनोखा देखो रे, काकाजी का;
करूं वंदन वारंवार, आओ-आओ प्राणाधार
पसंदीदा पात्र आया रे..... काकाजी का।। } 2

दिल्ली हुई सुहागिन आपके आने से
ला.....ला.....ला.....
दिल्ली हुई सुहागिन आपके आने से
हुए हम सनाथ आपको पाने से
निमित्त बन के तू, जंगम तीर्थ बना;
कोहिनूर हीरा है तू..... काकाजी का।।
विजय दिन मनाएं.....

कई सत्कर्म करवाने हैं तुमसे
ला.....ला.....ला.....
कई सत्कर्म करवाने हैं तुमसे
मुझको निजी लगाव है तुमसे
स्वतन्त्र होकर, कार्य करो अब;
संकल्प साकार किया रे..... काकाजी का।।
विजय दिन मनाएं.....

हे प्रेम करुणा के साक्षात् सागर
ला..... ला.... ला.....
हे प्रेम करुणा के साक्षात् सागर
करे अंतर्दृष्टि हम हर प्रसंग पर
केसरिया हम हो जाएं, तेरी तरह बन पाएं;
माला का मनका जैसे तू.... काकाजी का।।
विजय दिन मनाएं..... सर्जन अनोखा देखो.....
करूं वंदन वारंवार..... पसंदीदा पात्र आया.....
विजय दिन मनाएं.....

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	28.8.97	गुरुवार	– एकादशी, व्रत
(2)	दि.	1.9.97	सोमवार	– प्र.ब्र.स्व. प.पू. पप्पाजी महाराज की जन्मजयंती
(3)	दि.	13.9.97	शनिवार	– जलझीलनी एकादशी, निर्जला व्रत
(4)	दि.	14.9.97	रविवार	– वामन द्वादशी, फराली व्रत
(5)	दि.	19.9.97	शुक्रवार	– ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज का श्राद्ध दिन
(6)	दि.	25.9.97	गुरुवार	– श्री जी महाराज व पू. जागास्वामी का श्राद्ध दिन
(7)	दि.	26.9.97	शुक्रवार	– एकादशी का श्राद्ध, ब्र. स्व. योगीजी महाराज का श्राद्ध दिन
(8)	दि.	27.9.97	शनिवार	– गुरुहरि प.पू. काकाजी महाराज का श्राद्ध दिन
(9)	दि.	29.9.97	सोमवार	– मू.अ.मू. गुणातीतानंद स्वामिजी का श्राद्ध दिन
(10)	दि.	30.9.97	मंगलवार	– पू. भगतजी महाराज का श्राद्ध दिन

PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Bharat Pakaging and Allied Industries** C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110064